बेटी का पढ़ना

हरीश चंद्र पाण्डे*

लड़की का पढ़ना लिखना, इक दीपक जलना है।
नए जमाने में तो भैया, शिक्षा गहना है।

आओ आ जाओ बिटिया, स्कूल का कहना है।
सुबह-सुबह मत महुवा बीनो, अक्षर बिनना है।।

स्वर-व्यंजन की नाव चली, इसमें बैठो बिटिया।
है पतवार तुम्हारे हाथों, नापो सागर बिटिया।।

बेटी का पढ़ना लिखना, इक पेड़ लगाना है।
एक नहीं, यह तो पूरे, परिवार का फलना है।।

पांव पखारें लड़की के, रखकर के उपवास यहाँ।
मगर निरक्षर रखी बेटी, ये कैसा उपहार यहाँ।।

गार्गी तुम, लीलावती, सुनीता और कल्पना तुम।
पढ़ लिखकर के दुनिया की हर शै पर छाना तुम।।

*हरीश चंद्र पाण्डे, A/114, गोविंद कॉलोनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।